# पर्यावरणीय पर्यटन

पर्यावरणीय पर्यटन (ईकोटूरिज़्म) एक वैश्विक उद्योग है जो विविध प्रकार के नए अवसर तो प्रदान करता है मगर इसमें कुछ खास जोखिम भी छिपे होते हैं। एक तरफ तो यह स्थानीय समुदाय की आमदनी व आजीविका में उल्लेखनीय योगदान दे सकता है, प्राकृतिक संसाधनों के प्रति लोगों में एक बहुमूल्य लगाव पैदा कर सकता है और सच्चे सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अवसर पैदा कर सकता है। मगर, दूसरी तरफ यदि इसमें से 'ईको' पहलू को कमजोर कर दिया जाए या उसे केवल सतही तौर पर ही महत्व दिया जाए, जैसा कि अकसर होता है, तो यह संस्कृति या प्रकृति में निहित अपनी असली जड़ों को ही खतरे में डाल सकता है और धीरे-धीरे मुनाफे की आपाधापी की शक्ल ले सकता है।

*युक्सम, सिक्किम स्थित एक होम-स्टे।*

*युक्सम में लगा कचरे का एक कनस्तर। अब युक्सम में कचरा छंटाई केंद्र भी खोल दिया गया है।*

सिक्किम के एक उदाहरण से पर्यावरणीय पर्यटन के ऐसे ही कुछ अवांछित खतरों से निपटने में मदद मिलती है। १९९६ में ख़ांगचेंगज़ोंगा नैशनल पार्क के मुहाने पर स्थित युक्सम गांव के युवाओं ने ख़ांगचेंगज़ोंगा कंजर्वेशन कमेटी (केसीसी) का गठन किया ताकि पार्क में बनी ट्रेकिंग की पगडंडियों को और ज्यादा टिकाऊ बनाया जा सके। कमेटी ने 'कचरामुक्त ट्रेकिंग' की सोच को बढ़ावा दिया और सैलानियों के लिए होमस्टे यानी स्थानीय परिवारों के साथ रहने का बंदोबस्त किया। वन विभाग के साथ मिलकर कमेटी ने ट्रेकिंग चालकों द्वारा जलावन के इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी और मिट्टी के तेल से चलने वाले स्टोव मुहैया कराने लगी। अब यहां प्लास्टिक के कचरे की रीसाइक्लिंग की जाने लगी है और उन्हें केसीसी शिक्षा केंद्र में उत्पादों के रूप में बेचा जाता है।

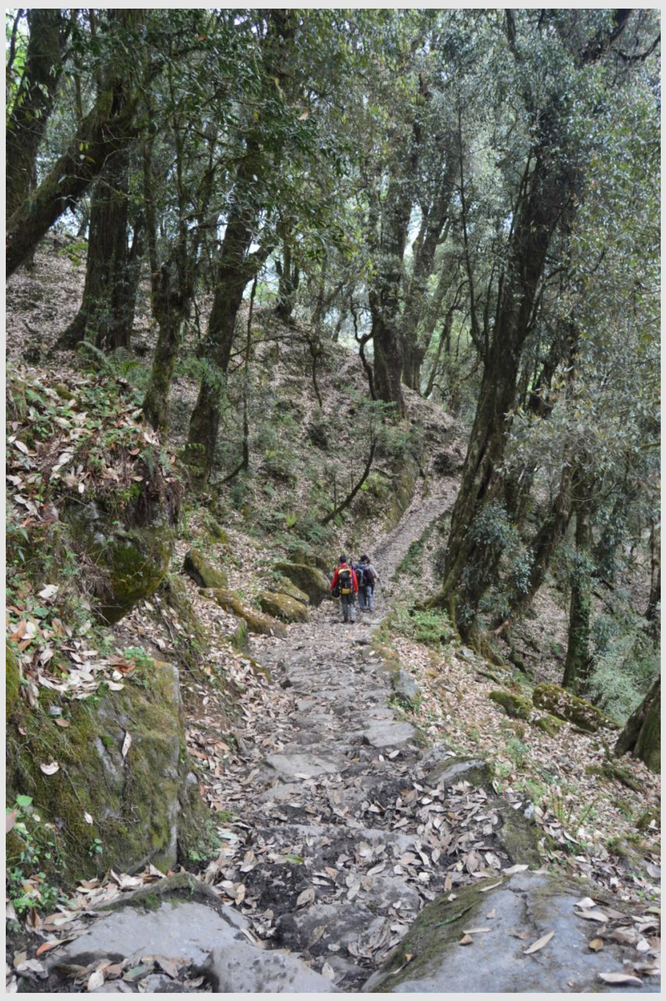

*ख़ांगचेंगज़ोंगा नैशनल पार्क में कचरा-मुक्त पग. डंडियां।*

*होडका, गुजरात स्थित शामे-सरहद रिज़ॉर्ट की दीवारों पर परंपरागत कला के नमूने। इस रिज़ॉर्ट में गारे और फूंस का ही इस्तेमाल किया गया है।*

कच्छ का होडका गांव बन्नी भू-क्षेत्र के मुहाने पर स्थित है। यहां का शाम-ए-सरहद रिज़ॉर्ट एक ऐसा पर्यटन कैंप है जो मालधारियों के स्थानीय समुदाय द्वारा ही बनाया और चलाया जा रहा है। परंपरागत वास्तुकला का प्रयोग और कला, हस्तकौशल व खान-पान सहित स्थानीय संस्कृति का संरक्षण इस पहलकदमी के पीछे मुख्य मार्गदर्शक सिद्धांत हैं।